काव्य के प्रयोजन एवं काव्य के लक्षण

डा० मिथिलेश कुमार
संस्कृत विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

1. **भरत**—सर्वप्रथम काव्यशास्त्र के आदि आचार्य भरतमुनि ने काव्य का प्रयोजन बताया। उनके अनुसार "नाट्य का प्रयोजन दु:ख से पीड़ितों, थके हुए, शोकसन्तप्त और दीन-दुखियों के दु:खादि को विश्रान्ति प्रदान करना है।"

"दु:खार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रामजननं लोके नाटयमेतद् भविष्यति"॥ **नाट्यशास्त्र** 1/114

2. **भामह**—भामह ने काव्य-प्रयोजन का कुछ विस्तार से विवेचन किया है। भामह ने धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति, कला में चातुर्य, कीर्ति तथा प्रीति अर्थात् आनन्द को काव्य का प्रयोजन माना है। तद्मतानुसार—

"धर्मार्थकामोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्य निबन्धनम्"॥ **काव्यालङ्कार** 1/2

3. **कुन्तक**—आचार्य कुन्तक ने काव्य-प्रयोजन को विलक्षणता तथा विशदता से वर्णित किया है—

"धर्मादिसाधनोपाय: सुकुमारक्रमोदित।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारक:"॥ **वक्रोक्तिजीवित** 1/3

4. **वामन**—वामन ने काव्य के प्रयोजन को सूक्ष्मता से वर्णित करते हुए, काव्य का दृष्ट प्रयोजन आनन्द एवं अदृष्ट प्रयोजन कीर्ति को स्वीकार किया है।

"काव्यं सत् दृष्टादृष्टार्थ प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्।"

काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति 1/1/5

5. **आनन्दवर्धन**—आनन्दवर्धन में प्रीति (आनन्द) को ही काव्य का प्रयोजन स्वीकार किया है—

"तेन ब्रूम: सहृदयमन: प्रीतये तत्स्वरूपम्"॥ **ध्वन्यालोक** 1/1

6. **मम्मट**—मम्मट ने काव्य-प्रयोजन की विवेचना असाधारण समन्वयवादिता से की है। उन्होंने प्राचीन आचार्यों के मतों का न तो अन्धानुकरण किया न ही मत का प्रतिवाद किया। उन्होंने काव्य का प्रयोजन इस प्रकार कहा—

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्य: परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे"॥ **काव्यप्रकाश** 1

अर्थात् काव्य यश-प्राप्ति के लिए, अर्थ-प्राप्ति के लिए, व्यवहार-ज्ञान के लिए, अनिष्ट-निवारण के लिए, सद्य-परनिर्वृति तथा कान्ता सम्मित उपदेश देने वाला होता है। ये छ: काव्य के प्रयोजन स्वीकार किये गये हैं।

7. **विश्वनाथ**—विश्वनाथ ने काव्य के प्रयोजन का विशद विवेचन किया है। उन्होंने धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष को काव्य का प्रयोजन प्रतिपादित किया है।

"चतुर्वर्गफलप्राप्ति: सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते"॥ **साहित्यदर्पण** 1/2

"सुकुमारमति वालों तथा परिणत बुद्धि वालों को अनायास ही धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चतुर्वर्ग के फलों की प्राप्ति काव्य से ही हो सकती है। अत: काव्य के स्वरूप का निरूपण किया जा रहा है।"

काव्य से चतुर्वर्ग की प्राप्ति अर्थात् रामादि की तरह माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए तथा रावणादि की तरह परदारा का हरण में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए, इत्यादि के द्वारा कृत्य (करने योग्य) अकृत्य (न करने योग्य) कर्मों में प्रवृत्ति तथा निवृत्ति का उपदेश किया जाता है।

काव्य से धर्म की प्राप्ति इस प्रकार होती है क्योंकि काव्य से यह अनायास ही ज्ञात हो जाता है कि भगवान नारायण के चरण कमलों की स्तुति के द्वारा नारायण की प्राप्ति सुलभ है। इस प्रकार, धर्म की प्राप्ति के अन्दर काव्य का कारण साक्षात् है। इसके अतिरिक्त, **"एक: शब्द: सप्रयुक्त: सम्यग्ज्ञात: स्वर्गे लोके कामधुग्भवति"** अर्थात् एक भी शब्द यदि सप्रयुक्त हो अर्थात् रस का व्यञ्जक बनाकर अच्छी तरह से रचित हो तो वह इस लोक तथा परलोक में सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। इस प्रकार, काव्य से धर्म-प्राप्ति सुलभ है। वेदशास्त्र में भी यही कहा गया है।

काव्य द्वारा अर्थ की प्राप्ति प्रत्यक्ष है। हम स्वयं देखते हैं कि काव्यकारों को काव्य के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। अर्थ द्वारा काम की प्राप्ति होती है। काव्य के द्वारा धर्म के फल की प्राप्ति के आसक्ति का त्याग कर देने से मोक्ष की प्राप्ति होती है अर्थात् काव्य के अध्ययन से मोक्ष के लिए उपयोगी वाक्यों का प्रयोग होने से मोक्ष की प्राप्ति की सम्भावना होती है।

चतुर्वर्ग की प्राप्ति वेद आदि शास्त्रों द्वारा भी होती है परन्तु वे नीरस होते हैं इसलिए परिपक्व बुद्धि वाले व्यक्ति शास्त्रों के ज्ञान द्वारा भी चतुर्वर्ग की प्राप्ति कर लेते हैं परन्तु काव्य से परमानन्द को उत्पन्न करने वाला अर्थात् आनन्ददायक होने के कारण कोमल बुद्धि वालों को भी सरलता से चतुर्वर्ग की प्राप्ति हो जाती है।

इस कथन से यह सन्देह होता है कि वेद आदि शास्त्रों के होते हुए परिपक्व बुद्धि वाले काव्यों के प्रति प्रवृत्त क्यों हों? इसका उत्तर देते हुए आचार्य विश्वनाथ कहते हैं कि कड़वी औषधि से शान्त होने वाला रोग यदि मीठी शर्करा से शान्त हो जाये तो किस रोगी की प्रवृत्ति मीठी शर्करा में नहीं होगी अर्थात् होगी। इसी प्रकार, यदि चतुर्वर्ग की प्राप्ति काव्य रूपी शर्करा से हो जाये तो किसकी प्रवृत्ति काव्य में नहीं होगी अर्थात् होगी।

इस प्रकार, विश्वनाथ ने चतुर्वर्ग को काव्य का प्रयोजन सिद्ध किया है।

काव्य का लक्षण

काव्यशास्त्र के क्रमबद्ध विकास के साथ काव्य की परिभाषा की समालोचना प्रारम्भ हो गई। काव्यत्व किसमें है अथवा किसमें नहीं है। इस तथ्य को दृष्टि में रखकर काव्यशास्त्र के आचार्यों ने काव्य के लक्षण प्रस्तुत किये। सर्वप्रथम, भामह ने काव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।

1. **भामह**—सर्वप्रथम काव्य का लक्षण प्रस्तुत करते हुए भामह ने शब्द और अर्थ की समष्टि को काव्य कहा—

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। **भामह—काव्यालङ्कार 1.16**

2. **हेमचन्द्र**—भामह की इस विचारधारा का अनुसरण हेमचन्द्र ने भी किया। उन्होंने दोषरहित, गुण एवं अलङ्कार-युक्त शब्द और अर्थ को काव्य कहा—

"अदोषौ सगुणौ सालङ्कारौ च शब्दार्थौ काव्यम्।"

काव्यानुशासन, पृष्ठ 16

3. **दण्डी**—आचार्य दण्डी ने काव्य का लक्षण अग्निपुराण के समान किया। उन्होंने इष्ट अर्थ से युक्त पद-समूह को काव्य स्वीकार किया।

"तैः शरीर काव्यानामलङ्काराश्च दर्शिताः।
शरीरः तावदिष्टार्थव्यवछिन्ना पदावली॥" **दण्डी, काव्यादर्श 1.10**

4. **भोजराज**—आचार्य भोजराज ने काव्य के लक्षण को सरल तथा स्पष्ट शब्दों में अभिव्यक्त किया—

"अदोषं गुणवत्काव्यलङ्कारैरलङ्कृतम्।
रसान्वितं कवि कुर्वन् कीर्ति प्रीति च विन्दति॥"

सरस्वतीकाण्ठाभरण, 112

5. **वामन**—आचार्य वामन ने रीति को काव्य की आत्मा माना—

"रीतिरात्मा काव्यस्य"

6. **आनन्दवर्धन**—आनन्दर्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार किया। उन्होंने **'काव्यस्यात्मा ध्वनि'** कहकर ध्वनि का प्रतिपादन किया।

7. **कुन्तक**—कुन्तक ने 'वक्रोक्ति काव्यजीवितम्' कहकर वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा माना।

8. **क्षेमेन्द्र**—क्षेमेन्द्र ने औचित्य को काव्य का प्राणतत्त्व कहा—

"औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यजीवितम्।" **औचित्यविचार चर्चा 4.5**

9. **मम्मट**—मम्मट ने काव्य का लक्षण इस प्रकार किया—

"तददौषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनःक्वापि"

मम्मट के अनुसार दोषरहित, गुणयुक्त, प्रायः अलङ्कार सहित किन्तु कहीं-कहीं अलङ्कार-रहित शब्द और अर्थ युगल को काव्य लक्षण के रूप में माना है। आचार्य मम्मट ने शब्दार्थौ शब्द और अर्थ के समन्वय को काव्य स्वीकार किया। यद्यपि पण्डितराज जगन्नाथ ने मम्मट के शब्दार्थ युगल को काव्य मानना उचित नहीं माना है तथापि उन्होंने उचित तर्क द्वारा शब्दार्थ युगल को ही काव्य माना। यह शब्दार्थौ पद के तीन विशेषण पद हैं- 1. अदोषौ, 2. सगुणौ, 3. अनलङ्कृती पुनः क्वापि।

10. **पण्डितराज जगन्नाथ**—पण्डितराज जगन्नाथ ने 'रसगङ्गाधर में काव्य का लक्षण इस प्रकार किया-

"रमणीयर्थप्रतिपादक शब्द काव्यम्"

उनके अनुसार—रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्द को काव्य कहते हैं। रमणीयता को उन्होंने अन्यत्र इस प्रकार स्पष्ट किया है—

"आह्लादपरपर्यायलोकोत्तरचमत्कारशालित्वमेवोर्थनिष्ठं रमणीयत्वम्"

अर्थात् आह्लाद का दूसरा नाम रमणीय है तथा यह लोकोत्तर चमत्कारी है। **"तुम्हारे घर पुत्र उत्पन्न हुआ है," तुमको धन दूँगा।"**

इस वाक्यार्थ से लोकोत्तर आनन्द की प्राप्ति नहीं होती अतः इस वाक्य को काव्य नहीं मानेंगे। लोकोत्तर ज्ञान को उत्पन्न करने वाले ज्ञान की अनुभूति का नाम **'रमणीयता'** है।

11. **रूद्रट** ने **"ननु शब्दार्थौ काव्यम्"** लक्षण करके भामह के समान शब्द और अर्थ को ही काव्य स्वीकार किया है।

12. **विश्वनाथ कविराज**—आचार्य विश्वनाथ ने रस को काव्य की आत्मा स्वीकार किया-

"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"

अर्थात् रसात्मक वाक्य को काव्य कहा है। डॉ. सत्यव्रतसिंह साहित्यदर्पण की काव्य परिभाषा पर टिप्पणी लिखते हैं कि विश्वनाथ कविराज की काव्य-परिभाषा में कवि की रहस्यमयी भावनाएँ, कवियों की कला के रहस्य के संकेत तथा सहृदयों की सहृदयता की कसौटी छिपी है। कविराज की वाणी काव्य के रहस्य को बताना तो चाहती है किन्तु वह यह न बताकर कविता पर कविता करने लगती है। इस परिभाषा के द्वारा उन्होंने **'रसात्मक महावाक्य'** **'महाकाव्य की रसात्मकं एकवाक्यता'** के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

आचार्य विश्वनाथ की दृष्टि से रस अर्थात् लोकोत्तर आनन्द जिस वाक्य में प्राप्त हो, उसी को काव्य कहते हैं। 'वाक्यम्' के द्वारा कविता के कलापक्ष और 'रसात्मकम्' के द्वारा भावपक्ष की समानता को स्वीकार करके कविता के दोनों ही पक्षों के अभेद को स्वीकार किया है।

13. **चण्डीदास**—श्री चण्डीदास ने 'काव्यप्रकाशदीपिका' में काव्य का प्रधान तत्त्व 'रसास्वाद' माना-

"आस्वादजीवातुः पद सन्दर्भ काव्यम्"

अर्थात् इस प्रकार काव्य के लक्षणों की समीक्षा का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में आचार्यों ने शब्द तथा शब्दार्थ के आधार पर काव्य का लक्षण किया, किन्तु उत्तरवर्ती आचार्यों ने काव्य की आत्मा पर अधिक ध्यान दिया। उन्होंने शब्द तथा अर्थ को काव्य का शरीर मानते हुए रस को काव्य की आत्मा स्वीकार किया।

2026.02.07 10:08